P.G. SEM. I. Paper - III

संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ :-

संत या ज्ञानाश्रयी काव्यधारा भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा की एक शाखा है। इस काव्यधारा के प्रमुख कवि संत कबीर, गुरु नानक देव, मलूकदास, रैदास आदि हैं। इस काल की प्रमुख रचनाएँ बीजक, कबीर ग्रंथावली, गुरुग्रंथ साहिब आदि हैं। संत काव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

(1) निर्गुणोपासना - संत कवि निर्गुणोपासक थे। वे ईश्वर को निर्गुण निराकार, अजन्मा, अविनाशी एवं सर्वव्यापी मानते हैं। कभी कभी वे इस निर्गुण को राम, गोविन्द, हरि आदि नामों से भी पुकारते हैं - "दशरथ सुत तिहुँलोक बखाना, राम नाम का मरम न जाना"

(2) गुरु की महत्ता - संत काव्य में गुरु को ईश्वर से अधिक महत्वपूर्ण बताया गया है। गुरु ही वह है जो साक्षात्कार करवाता है अतः गुरु ब्रह्म से भी अधिक ऊँचा है। गुरु की महत्ता इन्होंने नाथ पंथियों से ग्रहण की थी। यथा -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काको लागूँ पाँय
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।"

(3) ज्ञान की महत्ता - संत काव्य में ज्ञान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह ज्ञान वेद-पुराण या कुरान से नहीं, अपितु चित्त की निर्मलता एवं हृदय की पावनता से प्राप्त किया जाता है। ज्ञान के माध्यम से ही हम व्यक्ति को अज्ञान, अंधविश्वा

एवं पाखण्ड से मुक्ति दिला सकते हैं—
"जाति न पूछो साधु की पूछ लिजिए ज्ञान
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।"

(4) अद्वैतवादी दर्शन — सन्त काव्य का दार्शनिक आधार शंकराचार्य एवं उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवादी दर्शन है। इन कवियों ने ब्रह्म और जीव को एक माना है। माया के अस्तित्व को स्वीकार किया है, ईश्वर को निर्गुण निराकार बताया है एवं आत्मा को सर्वशक्तिमान बताया है — यथा
"जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना यह तन कथेहु गियानी।"

(5) समाज सुधार की भावना — संत कवि असल और कवि बाद में थे पहले वे समाजसुधारक थे। इसमें लगभग लोग निरक्षर थे और इन लोगों ने शास्त्रों पर गहरी चोट की है बाह्याडम्बरों का खण्डन किया है। मूर्ति पूजा, तीर्थाटन, नमाज, रोजा आदि का विरोध किया है। जाति पाति ऊँच नीच छुआ छूत आदि का भी विरोध किया है। इन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को फटकारते हुए कहा है—
"अरे इन दोउन राह न पाई।
हिन्दू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई।
वेश्या के पांयन तर सोवें यह देखौ हिन्दुआई।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहैं घर ही में करैं सगाई।।

(6) रहस्यवाद की प्रवृत्ति :— संत काव्य में रहस्यवाद को दर्शाया गया है। दाम्पत्य प्रतीकों के माध्यम से इन्होंने निर्गुण ब्रह्म के साथ माधुर्य भाव की भक्ति

का समावेश करते हुए भावात्मक रहस्यवाद का विधान किया है। कबीर का पद "दुलहिनि गावहु मंगलाचार" में भावात्मक रहस्यवाद एवं 'अवधू गगन मण्डल घर कीजै' में साधनात्मक रहस्यवाद है।

(7) नारी विषयक दृष्टिकोण – इन कवियों ने नारी के प्रति असंतुलित एवं अतिवादी दृष्टिकोण अपनाया है। संत कवि नारी को नरक का द्वार एवं माया का प्रतिरूप बताते हैं। नारी के प्रति उनका यह दृष्टिकोण नाथपंथियों का प्रभाव है।

(8) भाषा – संत कवि बहुश्रुत एवं घुमक्कड़ प्रवृति के थे इसलिए उनकी भाषा में बोलियों और भाषाओं का मिश्रण दिखायी देता है। ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, राजस्थानी पंजाबी, फारसी अरबी शब्दों के घुले मिले रूप मिलने के कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस भाषा को सधुक्कड़ी भाषा या पंचमेल खिचड़ी कहा है।

(9) अलंकारों का प्रयोग – संत कवि चूँकि कम पढ़े लिखे थे अतः इन्होंने चमत्कार प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि भावों के उत्कर्ष के लिए हुआ है। उसमें अनायास ही उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि का समावेश हो गया है।

(10) छंद एवं रस – संत कवियों ने मुक्तक ~~छंद~~ का प्रयोग किया है। दोहा, शबद, रमैनी, फाग आदि छंदों का मुख्यतः प्रयोग किया गया है। शांत रस की प्रधानता है एवं कहीं कहीं श्रृंगार रस का पूर्ण परिपाक रूप भी मिलता है।

सारतः कहा जा सकता है कि संत काव्य भाव प्रधान है, कला प्रधान नहीं।